स्त्री अध्ययन विभाग में शैक्षणिक संवाद की पंचम कड़ी

स्त्री अध्ययन विभाग में **शैक्षणिक संवाद की पंचम कड़ी** के अंतर्गत दिनांक 08 फरवरी, 2017 (बुधवार) को पूर्वाह्न 11:30 बजे प्रो. नंदकिशोर आचार्य, आई.आई.आई.टी., हैदराबाद का **'मानवाधिकार (Human Rights)'** विषय पर व्याख्यान का आयोजन संस्कृति विद्यापीठ के व्याख्यान कक्ष सं. 04 में किया गया। स्वागत वक्तव्य में डॉ. सुप्रिया पाठक (प्रभारी अध्यक्ष, स्त्री अध्ययन विभाग) ने प्रो. नंदकिशोर आचार्य जी का परिचय देते हुए कहा कि 'मानवाधिकार एवं गांधीवादी दर्शन में प्रख्यात विद्वान आचार्य जी शुरुआती दिनों से ही महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में शिक्षण एवं शोध से जुड़ें हुए हैं, इनके द्वारा अहिंसा-विश्वकोश का संपादन किया गया है।

प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने 'मानवाधिकार' पर अपने वक्तव्य में कहा कि सामान्यतः मानवाधिकार को 20 वीं. शताब्दी की देन समझा जाता है, जबकि इसके मूल्य विभिन्न संस्कृतियों, धर्मो एवं भारतीय चिंतन परम्परा में पहले से ही मिलते हैं, लेकिन तब उन्हें अधिकार की बजाय कर्तव्य कहा गया। उन्होंने यूनानी दार्शनिक *Sophocles* के नाटक *Antigone* (441 ई.पू.) का उदाहरण देते हुए कहा कि *Antigone* द्वारा उठाए गये प्रश्न मानवाधिकार के स्वरूप की तरफ ही संकेत करते हैं। स्वतंत्रता, समानता एवं न्याय के अधिकार पर विस्तृत बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि मानवाधिकार वे अधिकार हैं, जिससे किसी भी मनुष्य को, किसी भी परिस्तिथि में वंचित नहीं किया जा सकता है।

अपने वक्तव्य में उन्होंने मानवाधिकार से सम्बन्धित कुछ समस्याओं पर प्रश्न भी खड़े किये:-

1) क्या मानवाधिकार के माध्यम से सार्वभौमिकतावाद को बढावा दिया जा रहा है तथा संस्कृति सापेक्षतावाद को नकारा जा रहा है? सार्वभौमिकतावाद और नृजातीय (ethnic) की संस्कृति में कैसे संतुलन किया जाए?
2) अगर मनुष्य को जीने का अधिकार है तो क्या आत्महत्या (euthanasia) का अधिकार देना चाहिए?
3) समानता का अधिकार किन्तु समानता किस चीज की?
4) अपने पसंद का रोजगार करने का अधिकार किन्तु रोजगार के अवसर कौन व कैसे उपलब्ध करवाया जाए?
5) गर्भपात का अधिकार ?
6) मानवाधिकार बनाम पशुओं के अधिकार ?

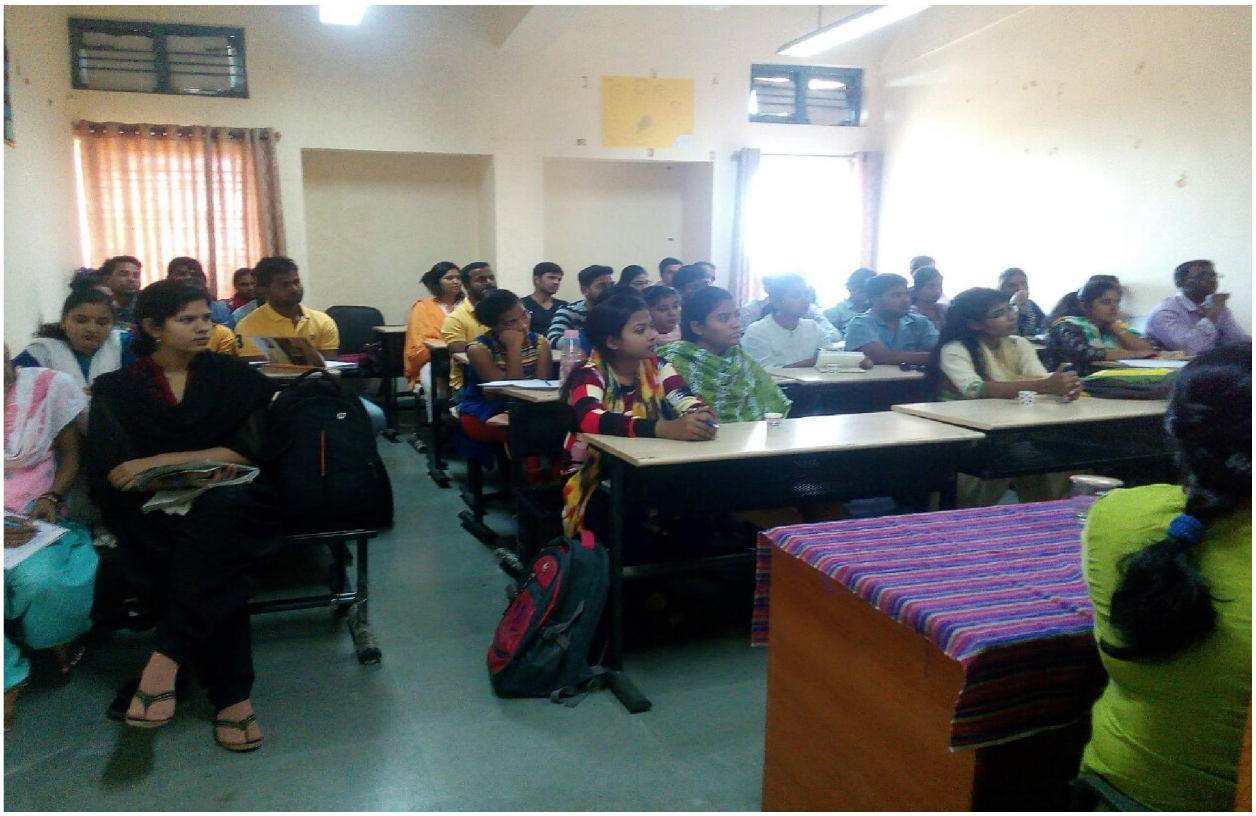

अपने वक्तव्य के अंत में प्रो. नंदकिशोर आचार्य जी ने श्रोताओं द्वारा पूछे गये प्रश्नों को अपने अनुभवी उत्तरों से संतुष्ट किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. सुप्रिया पाठक द्वारा स्त्री अध्ययन विभाग की तरफ से मुख्य वक्ता एवं सभागार में उपस्थित श्रोताओं का आभार व्यक्त किया गया। इस व्याख्यान में डॉ. अवंतिका शुक्ला, श्री चरनजीत समेत बड़ी संख्या में स्त्री अध्ययन विभाग एवं अन्य विभागों से छात्राएं एवं छात्र उपस्थित थे।